उत्तर:

“नोवेना” शब्द लैटिन भाषा के “Novem” से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है “नौ (9)”। कुछ संप्रदायों, विशेषकर कैथोलिक और ऑर्थोडॉक्स चर्च, ने इस शब्द को अपनाकर इसे नौ दिनों तक विशेष प्रार्थना करने की एक परंपरा बना लिया है।

इन प्रार्थनाओं में किसी विशेष आवश्यकता के लिए प्रार्थना या धन्यवाद प्रकट करना शामिल होता है। कैथोलिक चर्च में इसमें अकसर रोज़री (माला) प्रार्थना शामिल होती है, जो कि बाइबिल के अनुसार सही नहीं है।
रोज़री प्रार्थना क्यों बाइबिल के अनुकूल नहीं है, इसके बारे में विस्तार से जानने के लिए यहाँ पढ़ें:
 क्या पवित्र रोज़री की प्रार्थना बाइबिल आधारित है?

अब नोवेना यानी नौ दिन लगातार प्रार्थना करने की प्रथा, कुछ विशेष घटनाओं से प्रेरित है, जो नौ दिन या नौ महीने के बाद पूरी होती थीं। उदाहरण के लिए, पिन्तेकुस्त (Pentecost) के दिन से पहले, प्रेरित और कुछ अन्य विश्वासी एक स्थान पर इकट्ठे होकर लगातार नौ दिनों तक प्रार्थना कर रहे थे।
यीशु के स्वर्गारोहण के बाद दसवें दिन पिन्तेकुस्त आया।

नोवेना क्या है? और क्या यह बाइबिल में है?

इसलिए यह विश्वास बन गया कि नौ दिनों तक प्रार्थना करने के बाद कोई विशेष आशीष या आत्मिक वरदान मिलेगा, जैसे पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। इसी तरह कुछ लोगों ने यह भी सोचा कि जैसे महिला गर्भधारण के नौ महीने बाद संतान को जन्म देती है, उसमें भी कोई आत्मिक रहस्य छुपा है। इस तरह से “9” (नोवेना) के प्रति यह मान्यता बनी।

लेकिन मुख्य सवाल है:

क्या बाइबिल हमें यह सिखाती है कि हम नोवेना जैसी किसी प्रणाली के द्वारा प्रार्थना करें ताकि परमेश्वर से कुछ विशेष प्राप्त हो? क्या हमें नौ दिनों तक विशेष प्रार्थनाएँ दोहराते रहना चाहिए ताकि प्रभु हमें कुछ दे?

उत्तर है – बिल्कुल नहीं!

बाइबिल ने हमें कभी ऐसा आदेश नहीं दिया कि हम नोवेना प्रार्थनाएँ करें या नौ-नौ दिनों के चक्र में किसी चीज़ के लिए परमेश्वर से माँगें। यह केवल मानव-निर्मित परंपरा है, जो पिन्तेकुस्त के ऐतिहासिक प्रसंग से जुड़ी हुई है। लेकिन क्योंकि यह इंसानों की बनाई परंपरा है, यह कभी भी मसीहियों के लिए कोई आवश्यक आदेश या नियम नहीं हो सकता। कोई मसीही अगर नोवेना नहीं करता तो वह कोई पाप नहीं कर रहा।

यदि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से नौ दिनों तक लगातार प्रार्थना करने का निश्चय करे, जैसे कोई उपवास करता है, तो यह उसकी स्वेच्छा और परमेश्वर की अगुवाई पर आधारित हो सकता है।

लेकिन यह भी ध्यान देने योग्य है कि भले ही यह बाइबिल में आदेशित होता, फिर भी आज कुछ संप्रदायों (जैसे कैथोलिक चर्च) में इसे जिस तरह से किया जाता है, वह बिलकुल भी बाइबिल-संगत नहीं है।

बाइबिल हमें क्या सिखाती है?
पिन्तेकुस्त से पहले लोग एक स्थान पर प्रभु परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे। वहाँ मरियम, यीशु की माता भी थी, लेकिन वे सब किसी अन्य मृत संत से नहीं बल्कि सिर्फ परमेश्वर से ही प्रार्थना कर रहे थे। उनके सामने कोई मूर्ति या संत की प्रतिमा नहीं थी।

“तब वे जैतून नामक उस पहाड़ से यरूशलेम लौटे, जो यरूशलेम के निकट सब्बत का रास्ता है। और जब वे नगर के भीतर पहुँचे, तो उस अटारी पर जा चढ़े जहाँ वे ठहरे रहते थे; अर्थात पतरस और यूहन्ना और याकूब और अन्द्रियास, फिलिप्पुस और थोमा, बरथोलोमायुस और मत्ती, अलफाई का पुत्र याकूब, हत्ती और
याकूब का पुत्र यहूदा। ये सब एक चित्त होकर प्रार्थना और विनती में लगे रहते थे, स्त्रियों समेत, और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों समेत।”

(प्रेरितों के काम 1:12-14 | पवित्र बाइबिल: हिंदी O.V.)

आज की नोवेना प्रार्थनाओं में यह ठीक इसके विपरीत होता है – वहाँ मृत संतों से प्रार्थना की जाती है, जिनमें खुद मरियम भी शामिल है। यह बिलकुल बाइबिल के विरुद्ध है। ऐसी प्रार्थनाएँ आशीर्वाद नहीं लातीं बल्कि वे मूर्ति-पूजा बन जाती हैं, जो परमेश्वर की दृष्टि में घिनौना पाप है।

“मैं ही यहोवा हूँ, यही मेरा नाम है, मैं अपनी महिमा किसी दूसरे को न दूँगा और न अपनी स्तुति मूर्तियों को दूँगा।” (यशायाह 42:8 | पवित्र बाइबिल: हिंदी O.V.)

निष्कर्ष:

नोवेना बाइबिल में कहीं नहीं सिखाई गई है।
यदि कोई व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से नोवेना जैसा अभ्यास करता है और उसकी प्रार्थना परमेश्वर के वचन के अनुसार हो, उसमें मूर्तियों या पाखंड का कोई स्थान न हो, तो यह पाप नहीं है। हो सकता है, यह उसके लिए आशीषदायक हो।

परन्तु जब यह कोई अनिवार्य परंपरा बन जाए, और उसमें मूर्ति-पूजा

जुड़ जाए, तो यह परमेश्वर की दृष्टि में घोर पाप बन जाता है।

“तुझ को मेरे सिवा और कोई देवता न हो।”
(निर्गमन 20:3 | पवित्र बाइबिल: हिंदी O.V.)

प्रभु हमारी सहायता करे!

कृपया इस संदेश को दूसरों के साथ भी साझा करें।

Share on:
WhatsApp